ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 411-413

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

भूमंडलीकरण

बबलू कुमार भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, श्रीमती विमला देवी इंस्टीट्यूट आफ एजुकेशन, आवागढ़–एटा (उ0प्र0) भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 14.08.2020 E-mail: bhattrbabalu@gmail-com

सारांश : ***21वीं सदी के दौर में जहां भूमंडलीकरण की बात होती है अर्थात कहने का मतलब यह है कि पूरा विश्व एक गांव में तब्दील हो गया है । हम अपने दुख सुख किसी भी क्षण एक दूसरे से बांट सकते हैं, इसके साथ ही साथ अन्य विशेष उपलब्धियां भी हुई हैं । जैसे चांद पर पहुंचना ,मंगल ग्रह पर घर बनाने की बात करना, देश की तरक्की कैसे हो इसके लिए नई नई तकनीकी का बात करना तथा आवागमन के लिए तेज चलने वाली ट्रेनों और मेट्रो ट्रेनों की बात हो रही है लेकिन देश में व्याप्त सामाजिक असमानता, भेदभाव ,छुआछूत ,दुर्व्यवहार आदि अनेक प्रकार की रूढ़िवादी कुरीतियों को दूर करने के लिए कोई भी बात करने को तैयार नहीं है । क्या देश का सामाजिक आर्थिक विकास गिने–चुने अमीन उद्योगपतियों से संभव है ? नहीं, क्योंकि देश का 75: जनता दलित है, जसके सहयोग के बिना संभव नहीं है ।***

कुंजीभूत शब्द– भूमंडलीकरण, तब्दील, तरक्की, तकनीकी, आवागमन, सामाजिक असमानता, भेदभाव, छुआछूत।

इस बात की कहने में हमें कोई गुरेज नहीं है कि शूद्र ही दलित हैं। इसका प्रमाण हिंदू धर्म के सभी ग्रंथों में मिलता है। प्रमुख रूप से वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एवं शुद्र इनकी जनसंख्या क्रम से ब्राम्हण क्षत्रिय एवं विश्व की कुल जनसंख्या 25% है तथा शुद्र की 75% है ।

दलित शब्द के कई रूप हैं। जैसे'' शोषित, पीड़ित, दबा हुआ उदास, टुकड़ा, खंडित, तोड़ना, कुचलना, दला हुआ, पिसा हुआ, मसला हुआ, रोता हुआ, दलित कुचला, दबाया हुआ शोषित वर्ग समाज का वह वर्ग जिस अन्य उच्च वर्ग कहे जाने वाले लोगों के समान अधिकार और सम्मान प्राप्त नहीं है अछूत माने जाने वाले जातियां '"

स्वतंत्रता संग्राम में दलितों की अहम भूमिका थी। इसे नकारा नहीं जा सकता। लेकिन इतिहास में उनका नाम उभर नहीं पाया या उभारा नहीं गया अंग्रेजों को ईट का जवाब पत्थर से दलितों ने दिया, उनमें से प्रमुख आदिवासी बिरसा मुंडा ,उधम सिंह एवं रंपत चमार, जो चौरी चौरा कांड का मास्टरमाइंड था। हमेशा कहा जाता है कि देश को स्वतंत्र कराने में लाखों लोग शामिल हुए और कई हजार शहीद हुए लेकिन प्रसिद्ध कुछ ही लोग हुए उनके पीछे जो थे वे दलित थे। अंग्रेजों के पास आधुनिक हथियार थे लेकिन यहां के लोगों के पास पारंपरिक हथियार भाला, फरसा, तलवार, गड़ासा, टांगा, बल्लम एवं आदिवासियों के द्वारा सबसे ज्यादा उपयोग किए जाने वाले हथियार तीर धनुष था, फिर भी कांटे की टक्कर देते थे। आदिवासी का आधुनिक हथियारों के विरुद्ध विरोध इस प्रकार देखा जा सकता है, ''जल्लादों आज तुम्हारे हाथ में कल योगी पापी विद्या है, उससे बनाए नाशक हथियारों की ताकत है, तुम सताए, गरीब व बेसहारा इंसानों का शिकार कर सकते, हो मन में विचार करो हमारी जन की लड़ाई, हम लड़ रहे हैं यह लड़ाई हमारे प्राणों की नहीं है। वह वंश की है, हमारे पुरखों ने भी जमीन की लड़ाई लड़ी थी आज के हमारे नादान बालक भविष्य में जागृति की राज पर आगे बढ़ते रहेगे। भगवान अभी हमारी सुध नहीं ले रहा है। वह सत्य व धर्म का रखवाला है हमारी मुहिम भगवान की मनसा के मुताबिक है। हम इंसानों के लिए ही नहीं भगवान की रचना के लिए लड़ रहे हैं।" 2

वर्तमान समय में बहुत सारे परिवर्तन एवं विकास हुआ, बिना शादी के लीव इन रिलेशनशिप में रह रहे हैं, अंतर जाति विवाह को मान्यता मिल रही है समलैंगिक विवाह को मान्यता दी जा रही है। लेकिन इन चीजों को जानबूझकर विभिन्न माध्यमों से हाईलाइट किया जाता है। समाचार पत्र पत्रिकाओं, टेलीविजन, व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक आदि के माध्यम से सब कुछ ठीक–ठाक दिखाया जाता है कि हमारी सामाजिक समरसता को कोई और किसी से खतरा नहीं है, इससे क्या मान ले सब कुछ ठीक है। नहीं ? यह उसी तरह है, जिस तरह शीशे के सामने सब कुछ ठीक–ठाक दिखाई देता है लेकिन उसके पीछे कुछ भी नहीं, कहने का तात्पर्य भारत में इतना विकास होने के बावजूद भारत में जातिगत भेदभाव किया जाता है। जैसे मंदिर प्रवेश से निषेध किया जाता है। विद्यालय में मध्यान भोजन अलग बैठा कर दिया जाता है। किसी भी शासकीय एवं अशासकीय विभाग का अधिकारी चाहे आईएएस हो या किसी भी उच्च पद में हो मान सम्मान न देना, 2जातिगत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

गाली देना, शहर में किराए का मकान जाति पूछ कर देना, आदि'' हमारी मंजूरी के बावजूद हमारी जाति से भी हमारी पहचान है। मैं जिस जात में जन्मा हूं वह मरते दम तक और यकीनन मरने के बाद भी मेरी गर्दन नहीं छोड़ेगी। जात की इस पहचान को सायद हमारी पीढ़ियां भी वहन करेगी। आदमी से लेकर देवता तक सब जाति में हैं। इसमें कोई बदलाव नहीं है। सब कुछ और देवता विभिन्न जातियों से घट बढ़ जाते हैं फिर मैं जाति से क्यों भागना चाहता हूं? क्या हम इसे खत्म कर पाएंगे? क्या मेरा ऐसा सपना देखना दिन में तारे देखना जैसा है?''[3]

दलित, प्राचीन काल से ही अपनी अस्मिता के लिए तड़पता रहा है, अपनी कौम की पहचान बनाने के लिए कई बार प्रयास किए। रामायण कालीन के शंबूक ऋषि से लेकर महाभारत कालीन के एकलव्य तक, वर्तमान समय में द्रोणाचार्य जैसे गुरु हैं, लेकिन वे अंगूठे नहीं विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में अंक काटते हैं। इसके साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे आई० ए० एस०, पी०एस० सी०, इत्यादि के साक्षात्कार के अंक काटते हैं। इसके बाद भी सतत प्रयास चले आ रहे हैं। बार–बार इनके मार्ग को अवरुद्ध किया जाता है, फिर भी बहुत सारे दलित महापुरुषों के द्वारा उत्थान का कार्य जारी है। जैसे संत रविदास, ज्योतिबा फूले, परियार, स्वामी छत्रपति शाहूजी महाराज, डॉ० अंबेडकर, कांशीराम, एवं मायावती इत्यादि। कुछ दलितों ने विद्रोह भी किए, इनमें से प्रमुख भीमा कोरेगांव 1818 में, म्हारो और पेशवाओं के बीच हुआ था। सहारनपुर विद्रोह 2017, दलितों एवं राजपूतों के बीच हुआ। धीरे–धीरे अपनी पहचान के लिए संघर्ष करते नजर आ रहा है। भारत में दलित जाति में पैदा होना व्यक्ति के लिए अभिशाप जैसा है फिर भी कमोवेश सभी युग में कुछ लोग ऐसे हुए जिन्होंने निम्न जाति में जन्म लेकर भी समाज में अपने लिए सम्मानजनक स्थान बनाया। यह सर्वविदित है कि बाल्मीकि बधिक, वशिष्ठ वेश्या पुत्र, व्यास सत्यवती नाम की एक ढीमर कन्या की संतान, तथा पाराशर, निचले तबके के थे। कर्ण का पालन भी निम्न कुल में हुआ, एकलव्य सामान वीर साधारण कुल में ही पैदा हुआ। सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य दासी पुत्र थे। मध्य युग में कबीर,दादू, रैदास, चोखा, मेला आदि अनेक संत जिनकी समाज में बड़ी प्रतिष्ठा थी। वे या तो मध्य निम्न जाति में पैदा हुए या निम्न या निम्न मध्य पुल में उनका पालन–पोषण हुआ। निम्न या साधारण कुल में जन्म लेकर भी सभी महान बने।[4]

दलितों के हक की लड़ाई चाहे वह सामाजिक रूप से या आर्थिक रूप से, आजादी दिलाने का श्रेय डॉ० भीमराव अंबेडकर को दिया जाता है। यह दलितों के उद्धारक मसीहा माने जाते हैं। आज दलितों को जो भी मान सम्मान मिला है इन्हीं की बदौलत मिला है। आधुनिक भारतीय चिंतकों में डॉक्टर अंबेडकर का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जीवन भर सामाजिक शोषण के लिए संघर्ष किया। डॉ० अंबेडकर का बचपन से ही उत्पीड़न, शोषण एवं अपमान से गुजरना पड़ा। इसलिए विद्यालय के दिनों में जब एक अध्यापक ने उनसे पूछा कि तुम पढ़ लिख कर क्या बनोगे? तब बालक भीमराव ने जवाब दिया था। मैं पढ़ लिखकर वकील बनूंगा। नया कानून बना लूंगा। छुआ –छूत को खत्म करूंगा। उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी संकल्प के पीछे झोंक दिया।[5]

स्वतंत्रता के पूर्व देश के विभिन्न प्रकार के अंधविश्वास, रूढ़िवादी परंपराएं व्याप्त थी उच्च वर्गों के द्वारा, निम्न वर्ग यानी दलितों के छाया से भी परहेज था। कई प्रकार के कठोर नियम बनाए गए थे। दलितों के गले में हाड़ी एवं कमर में झाड़ू बांध दिए जाते थे। जिसमें पृथ्वी पर इनके पद के निशान ना मिले। वेद, पुराण के मंत्रों को सुनना भी मना ही था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद बहुत कुछ बदला हुआ था। सन 1947 के पूर्व और बाद में भी काफी समय तक कुछ मध्यमवर्गीय जातियों को यह समझा जाता था उनके अनुष्ठानों में जैसे सत्यनारायण की कथा, उपवास श्रृंखला का उद्यापन, दुर्गा पूजन और श्राद्ध ब्राम्हण अनुष्ठान संपादित तो कर आते थे, दक्षिणा भी लेते थे परंतु भोजन नहीं करते थे। भोजन के स्थान पर सूखा सिद्धा नाम से अनाज, गुड, खान आदि बटोर लेते थे। यदि कोई यजमान अपने घर पर ही भोजन कराने की जिद कर बैठता तो उनकी रसोई को गाय के गोबर से अथवा पीली मिट्टी से पोत कर गंगाजल का छीटा लगाकर पहले तो पवित्र किया जाता था और बाद में ब्राह्मणी स्वयं भोजन तैयार करके ही उसे ग्रहण करते थे।[6]

भारत में दलितों को हमेशा ठगा गया है, चाहे धर्म के नाम पर हो, या चाहे राजनीति के नाम पर, जब नेताओं को दलित वोट बैंक की राजनीति करनी होती है तो हम सब हिंदू हैं और सबको मिलजुल कर रहने की बात कही जाती है, लेकिन जब सत्ता में काबिजहो जाते हैं तो दलित शुद्र निम्न जाति समझकर उपेक्षित व तिरस्कृत किया जाता है, जब धर्म की बात आती है या धर्म की रक्षा के आड़ में दंगे फसाद करवाने होते हैं तो दलितों का इस्तेमाल किया जाता है, जब काम निकल जाता है तो उन्हीं दलितों की मंदिर में जाने से मना कर दिया जाता है। गेल ओम वेट के अनुसार ''दलित आंदोलन ने न केवल हिंदू समाज की विकृतियां और जातियों का आलोचना की बल्कि साथ ही हिंदू धर्म पर भी प्रहार किया। उनका कहना था कि यह ब्राह्मणवादी समाज

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

है, जो जातियों में बटा है और अतार्किक है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि हिंदू संस्कृति नहीं रहा है, बल्कि सारा धर्म जबरदस्ती लादा हुआ है। यदि शोषण से बचना चाहते हैं तो इस बात की आवश्यकता है कि नीची जातियां इस लादे हुए धर्म को नकार दें। दलित अपने आप को गैर हिंदू के रूप में परिभाषित करें और एक नई धार्मिक पहचान को प्राप्त करें "। फुले ने यह प्रयत्न किया था कि एक नया आस्तिक धर्म बनाया जाए, पेरियार ने अनिश्वर वादिता को प्रोत्साहन दिया, डॉ० अम्बेडकर बौद्ध धर्म में शामिल हो गए। नारायण गुरु ने एक धर्म, एक जाति ,एक ईश्वर के सिद्धांत को अपनाया।7

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में दलितों के जीवन में बहुत सारे परिवर्तन हो रहे हैं। अपनी पहचान हासिल करने के लिए सतत प्रयास जारी है।

गांव से लेकर शहर तक, विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक, धार्मिक क्षेत्र से लेकर राजनीतिक क्षेत्र, प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष कर आदर्श जीवन जीने के साथ ही देश की विकास की मुख्यधारा से जुड़ने के लिए संघर्षरत हैं। देश के प्रत्येक प्रदेश के शासन प्रशासन की दलित विकास व अस्मिता संबंधी नीतियों पक्ष –विपक्ष होकर प्रभावित कर रही है । इन पर दलित का ध्यान भी आकर्षित हो रहा है, तथा वह अपने अधिकार के प्रति जागरूक व सजग हो रहे हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पुष्प लता, सिंह राजकमल बृहत हिंदी शब्दकोश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 431.
2. हरिराम मीणा ,धूणी तपे तीर, अलग प्रकाशन राजस्थान 2008, पृष्ठ 373, 374.
3. अजय नावरिया, उधर के लोग, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 27.
4. डॉ० अम्बेडकर, सामाजिक आर्थिक विचार दर्शन मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ 02.
5. राजेंद्र भट्ट, आजकल नई दिल्ली, पृष्ठ 35.
6. हरपाल सिंह, दलित साहित्य की भूमिका ,जवाहर पुस्तकालय मथुरा उत्तर प्रदेश ,पृष्ठ 03.
7. गौरीनाथ, बया, संस्ति और विचार का त्रैमासिक अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 19.

*****